Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 19, Issue No. 6, December-2022, ISSN 2230-7540

शिक्षा के सन्दर्भ में डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् के शैक्षिक विचारों का अध्ययन

सत्येन्द्र कुमार गौड[1*] डॉ. निर्मला राठौड[2]

[1] शोधार्थी, लाडर्स विश्वविद्यालय, अलवर (राज.) भारत

[2] शोध पर्यवेक्षक, लाडर्स विश्वविद्यालय, अलवर (राज.) भारत

सार- *शिक्षा व्यक्ति की आन्तरिक शक्तियों को विकसित करने की प्रक्रिया है। अतः शिक्षा एक गतिशील प्रवाह और जीवन का अनिवार्य अंग है और व्यक्ति शिक्षा के अनुपम व अद्भूत प्रकाश में ही अपने जीवन को अलोकित करता हुआ जीवन की तमाम विषमताओं पर सफलतापूर्वक विजय हासिल करता है। शिक्षा के ही द्वारा समाज अपनी संस्कृति की रक्षा करता है। इस प्रकार जीवन की उदारता, उच्चता सौन्दर्य एवं उत्कृष्टता शिक्षा द्वारा ही संभव है। कमेनियस के अनुसार -" शिक्षा सम्पूर्ण मानव का विकास है। सर्वविदित हैं कि गुफाओं और कन्दराओं में रहकर वन्य जीवन व्यतीत करने वाले मानव ने अपने बुद्धि, विवेक तथा शिक्षा के बल पर अपने आदिम अवस्थाओं से उत्तरोत्तर विकास कर महान सामाजिक संगठनों और संस्कृतियों का सृजन कर सकने में सक्षम हुआ हैं तथा ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में आशातीत सफलताएँ अर्जित की हैं । फलतः आज 21 वीं सदी में मानव अन्तरिक्ष, चन्द्रमा तथा मंगल ग्रह तक पहुचने में सफल हो सका हैं। मानव सभ्यता के उद्भव और विकास तथा संस्कृति के निर्माण में शिक्षा का सराहनीय योगदान रहा हैं। शिक्षा व्यापक अर्थ में, जिसमें जीवन-पर्यन्त शिक्षा की धारणा शामिल है, मुल्यों के निर्धारण में सबसे सशक्त माध्यम हैं। जिसमें परम्परा और नवीनता का समन्वय हो, परम्परागत ज्ञान और विवेक के नवीनीकरण और व्यवहार की प्रगतिशील प्रणाली द्वारा एक नया समाज खास तौर से विकासशील दुनिया में उभर कर सामने आये। महान शिक्षक जा. पियाजे के अनुसार " शिक्षा का प्रमुख कार्य ऐसे मनुष्य का सृजन करना है जो नये कार्य करने में सक्षम हो शिक्षा से सृजन, खोज आविष्कार करने वाले व्यक्ति का निर्माण होना चाहिए।" शिक्षा को त्वरित आर्थिक विकास और प्रौद्योगिकीय प्रगति प्राप्त करने और स्वतंत्रता, न्याय व समान अवसर के मूल्यों पर आधारित सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करने का महत्वपूर्ण कारक स्वीकार किया गया। सामाजिक सांस्कृतिक गतिशीलता के प्रमुख संचालक के रूप में शिक्षा की भूमिका उस समय बहुत स्पष्ट होती हैं जब समाज औद्योगिकरण के मार्ग पर अग्रसर होता हैं।*

कुंजी शब्दः- *डॉ राधाकृष्णन के शैक्षिक विचारों का समग्र अध्ययन प्रस्तुत करना।*

----------X----------

प्रस्तावना

शिक्षा के माध्यम से विश्व ने सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक तथा वैज्ञानिक क्षेत्रों में विकास किया हैं। शिक्षा से नये विचारो का जन्म होता हैं; विचारों से नये आविष्कार होते है, जिससें विश्व प्रगति के पथ पर अग्रसर होता हैं। एक तरह से शिक्षा कल्पलता के रूप में विद्यमान हैं। एकान्त में यह सहचरी का कार्य करती हैं। भर्तृहरि का मानना हैं कि विद्याहीन मनुष्य पशु के समान हैं। प्राचीन विचारकों तथा मनीषियों ने घोषित किया कि आत्मानुभूति शिक्षा के द्वारा ही संभव हैं तथा शिक्षा से ही चरित्र निर्माण किया जा सकता हैं। सही अर्थो में चरित्रवान व्यक्ति वह हैं जिसे वेदों का नाम मात्र ज्ञान हैं किन्तु वह उस विद्वान की अपेक्षा उत्तम हैं, जो वेदों का पारंगत विद्वान तो हैं किन्तु उसका चरित्र उत्तम नहीं हैं। इस प्रकार शिक्षा का मूल तात्पर्य व्यक्ति को 'तमसों माँ ज्योतिर्गमय' का मार्ग दिखलाना हैं। प्राचीन काल से ही शिक्षा का धर्म एवं दर्शन से घनिष्ठ का सम्बन्ध रहा हैं। भारतीय शिक्षा शुरू से ही दार्शनिक एवं धार्मिक सिद्धान्तों से जुड़ी रही हैं। संसार की परिस्थितियों में परिवर्तन के फलस्वरूप दार्शनिक विचार धाराओं में परिवर्तन होता रहता हैं। सत्य तो यह हैं कि दर्शन का व्यावहारिक रूप

www.ignited.in

शिक्षा हैं और शिक्षा सैद्धान्तिक रूप दर्शन। वह दर्शन, दर्शन नहीं हैं जिसका शिक्षा पर प्रभाव न हो और वह शिक्षा, शिक्षा नहीं हैं जिसकी दार्शनिक पृष्ठभूमि न हो। वास्तविक दर्शन वह हैं जिसमें भावी युवको को जीवन के प्रति उचित दृष्टिकोण को अपनाने हेतु प्रेरित करने और सम्पूर्ण समाज को शिक्षा के उचित विचारों को ग्रहण करने की शक्ति होती हैं। प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था दार्शनिक एवं धार्मिक सिद्धान्तों से जुड़ी रही हैं। राजनीति का प्रभाव शिक्षा पर वर्तमान युग में स्वतंत्रता के पश्चात पड़ने लगा हैं। वावजूद इसके, भारतीय शिक्षा प्राचीन काल के दार्शनिक तथा मूल्यपरक विचारों से अब भी अति घनिष्ठ संबंध रखती हैं। वैदिक कालीन शिक्षा और स्मृति युगीन शिक्षा का प्रभाव निरंतर चला आ रहा हैं। शिक्षा शास्त्र के सभी विषयों तथा कार्यो में इन दार्शनिक विचारों का प्रभाव दिखलायी पड़ता हैं। प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक के सभी विषयों एवं पाठ्यक्रमों पर इसका प्रभाव पाया जाता हैं। प्राचीन शिक्षा व्यवस्था तथा व्यक्ति विशेष शिक्षा व्यवस्था पर अलग अलग अनेको विस्तृत अध्ययन हुए हैं किन्तु स्वतन्त्र भारतीय की शिक्षा व्यवस्था विषय पर आंशिक रूप से छिट-पुट ही कार्य हुआ हैं। प्रस्तावित अध्ययन का औचित्य भारतीयों की शिक्षा व्यवस्था के अन्तगत डॉ. राधाकृष्णन जी के शैक्षिक विचारों का विस्तृत अध्ययन करना हैं साथ ही इसकी वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपादेयता का परीक्षण भी करना हैं। शिक्षा देने के क्षेत्र में अति प्राचीन काल से मनीषियों ने भी कुछ प्रयास करके अपनी ओर से दी जाने वाली शिक्षाओं को साकार रूप से प्रस्तुत करने का प्रयास किया हैं। डॉ राधाकृष्णन जी ने भी उनमें से एक प्रयास हैं, जिसमें जीवन निर्वाह से सम्बन्धित अनेक प्रकार की शिक्षा उल्लिखित हैं। भारतीय दार्षनिकों ने अपनी बुद्धि ,मनन चिन्तन से जो उपयोगी सोचा और समझा और उसके बारे में लिखकर हमें सौप दिया। हमें जब और जिसकी आवश्यकता महसूस हुई, हमने उनको अपनाया। आज यही कारण है कि स्वतन्त्र भारत में डॉ. राधाकृष्णन जी के शैक्षिक दर्शन और विचारों की महती आवश्यकता व उपादेयता महसूस की जा रही है।

समस्या कथन

"शिक्षा के सन्दर्भ में डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के शैक्षिक विचारों का अध्ययन एवं वर्तमान सन्दर्भ में उसकी प्रासंगिकता" ।

अध्ययन की आवष्यकता एवं महत्व

शिक्षा से लोगों को उस बात का अवसर मिलता है कि वे मानव जाति की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, नैतिक तथा अध्यात्मिक क्षेत्र में आई हुई समस्या पर विचार कर सके। वर्तमान समय में जबकि शिक्षा का स्तर-निरन्तर घटता जा रहा है तथा साधारण युवा पीढ़ी का ध्यान पश्चिमी सभ्यता की तरफ हो रहा है। ऐसे समय में शिक्षा को ठोस आधार तथा आकार देने की जरूरत है। प्राचीन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति विश्व की सर्वाधिक रोचक तथा महत्वपूर्ण सभ्यताओं में से एक हैं। इस सभ्यता को चरम पराकाष्ठा तक पहुचाँने में यहाँ की शिक्षापद्धति का सर्वोत्तम योगदान रहा हैं। जिसने इस सभ्यता को चार हजार वर्षो से भी अधिक समय तक सुरक्षित रखा उसका प्रचार प्रसार किया तथा उसमें संशोधन किया। प्राचीन भारतीयों ने शिक्षा को अत्यधिक महत्व प्रदान किया। भौतिक तथा आध्यात्मिक उत्थान तथा विभिन्न उत्तरदायित्वों के विधिवत निर्वहन के लिए शिक्षा की महत्ती आवश्यकताओं को सदैव स्वीकार किया। वैदिक युग से चली शिक्षा का पुंज स्मृति युग में आकार और भी आलोकित हो गया तथा उसे जनसाधारण तक ने स्वीकार किया। शिक्षाविदों ने वेदों ,ब्राह्मणग्रन्थों ,धर्मसूत्रों आदि ग्रन्थों की दुरूहता को निज प्रयास द्वारा और भी सरल करके स्थापित किया जिसे लोगों ने सहजता से स्वीकार किया। यही कारण हैं कि वर्तमान युग में विश्व के अनेक भागों में विचारशील चिन्तक, दार्शनिक शिक्षाशास्त्री तथा समाजशास्त्रियों ने भारतीय धर्मग्रन्थों के शैक्षिक संदेशों की वर्तमान सन्दर्भ में समीक्षा करते हुए विज्ञान के इस नाभिकीय युग में सृष्टि के प्रत्येक प्राणी के लिए विशेषकर मानव के लिए अत्यन्त आवश्यक अनिवार्य और उपयोगी माना हैं। वर्तमान में समस्त विश्व कतिपय गंभीर समस्याओं यथा हिसांवाद, क्षेत्रवाद, जातिवाद, सम्प्रदायवाद, आतंकवाद और मानव-मानव के बीच बढ़ते वैमनस्यवाद से पीड़ित हैं। इस गंभीर समस्याओं ने विश्व को एक ऐसे मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया हैं जहाँ पर ऐसा लगता हैं कि समस्त मानव सभ्यता कहीं विलीन न हो जाये और मानव सभ्यता के विलीन होने के साथ ही जड़ चेतन प्राणी के अस्तित्व का भी खतरा उत्पन्न हो जायेगा। विश्व में शायद ही कोई ऐसा राष्ट्र हो जो वर्तमान में आतंकवाद, सम्प्रदायवाद, जातिवाद और अलगाववाद की समस्याओं से प्रभावित ना हों । प्रगति के इस वैज्ञानिक युग में मानव सिर्फ अपने में ही खोकर रह गया हैं। उसे अपने नीजी स्वार्थ के आगे न तो देश की चिन्ता हैं और न ही अपने समाज और परिवार की। ऐसी स्थिति में वह मानव समुदाय के लिए कैसे सोच सकता हैं जहाँ उनका स्वार्थ ही प्रधान बनकर रह गया हैं। निश्चय ही ऐसी स्थिति में कुछ ऐसे कट्टरवादी साम्प्रदायिक समूहों

www.ignited.in

का संगठन बनेगा जो अपने निज स्वार्थ में निर्दोष मानव जाति का विनाश करने में कतई संकोच नहीं करेगा।

शोध के उद्देष्य

1 डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के जीवन के बारे में जानकारी प्राप्त करना।

2 डॉ. राधाकृष्णन के दार्शनिक विचारों की जानकारी प्राप्त करना।

3 डॉ. राधाकृष्णन के शैक्षिक विचारों की जानकारी प्राप्त करना।

4 डॉ. राधाकृष्णन के आध्यात्मिक विचारों की जानकारी प्राप्त करना।

5 डॉ. राधाकृष्णन के शिक्षा के क्षेत्र में किये गये प्रयासों के बारे में जानकारी प्राप्त करना।

6 डॉ. राधाकृष्णन के शैक्षिक विचारों की उपादेयता का अध्ययन करना।

7 डॉ. राधाकृष्णन के शैक्षिक विचारों तथा उपादेयता को आधुनिक सन्दर्भ में लागू करने की दिशा में पड़ने वाले प्रभावों को दर्शाना।

8 डॉ. राधाकृष्णन के शैक्षिक विचारों में आधुनिक युग के छात्रों की आवश्यकता का पता लगाना।

9 डॉ. राधाकृष्णन के विचारों से शिक्षा में शिक्षक वर्ग की आवश्यकता का पता लगाना।

शोध की परिसीमाऐं

शोधार्थी द्वारा शोध का विषय डॉ. राधाकृष्णन के शैक्षिक विचारों का अध्ययन का ही चयन किया गया है। अस्तु अध्ययन का क्षेत्र डॉ. राधाकृष्णन के जीवन परिचय, शिक्षा-दीक्षा किये गये प्रमुख कार्य, दर्शन के क्षेत्र में सुझाये गये, मार्ग आदि तक सीमित रहेंगे। इसके अतिरिक्त दार्शनिक विचारधारा के अन्तर्गत सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, नैतिक, राजनैतिक आदि विचारधाराओं को सम्मिलित किया गया है।

शोध परिकल्पना

1. शिक्षा मानव विकास का मूल साधन हैं इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास किया जाता हैं। ज्ञान तथा कौशल में वृद्धि होती हैं तथा आचार विचार तथा व्यवहार में परिमार्जन किया जाता हैं। इसी शिक्षा से मानव को सभ्य सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता हैं। इसके द्वारा विगत पीढ़ियों द्वारा अर्जित ज्ञान आगामी पीढ़ियों को हस्तांतरित किया जाता हैं। सुव्यवस्थित शिक्षा व्यवस्था की परिकल्पना कर उसे स्थापित करने का प्रयास एक व्यावहारिक कदम हैं।

2. शिक्षा शास्त्रियों, चिन्तकों, मनीषियों तथा स्मृतिकारों की दृष्टि में शिक्षा से विकसित ज्ञान को अपूर्व माना गया हैं जिसके कारण शिक्षित व्यक्ति अन्य व्यक्तियों की तुलना में श्रेष्ठ माना गया हैं। द्रव्यमान ज्ञान की अपेक्षा ज्ञानमययज्ञ को श्रेष्ठ बतलाया गया हैं। क्योंकि ज्ञान में सभी कर्मो की परिसमाप्ति हो जाती हैं।

3. आधुनिक शिक्षा शास्त्री इस तथ्य को स्वीकार करते हैं कि शिक्षा शास्त्रियों द्वारा वर्णित शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य आध्यात्मिक तथा नैसर्गिक था। डॉ. राधाकृष्णन ने मनुष्यों के व्यक्तित्व का विकास करते हुए समाज की समुन्नति की कामना के साथ ईश्वरोपासना में लीन होकर पुरूषार्थो की पूर्ति और तीन गुणो से मुक्ति के योग्य मानव को बनाने में पूर्ण योगदान दिया हैं, जो वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में नहीं दिखता हैं। वर्तमान शिक्षा को शिक्षा ग्रन्थों में वर्णित शिक्षा व्यवस्था के समतुल्य बनाने की परिकल्पना को मूर्तरूप दिये जाने की बात सोची गई हैं।

4. शिक्षा की आधुनिक अवधारणा में शिक्षा को श्रेष्ठ नागरिक निर्माण करने वाली बताया गया हैं। आर्थिक सम्प्रत्यय में शिक्षा वह आर्थिक निवेश हैं जिसके द्वारा व्यक्ति में उत्पादन एवं संगठन का विकास किया जाता हैं तथा इस प्रकार व्यक्ति समाज तथा राष्ट्र की उत्पादन क्षमता का सृजन करता हैं और स्वतः ही राष्ट्र का आर्थिक विकास किया जाता हैं।

5. वैज्ञानिक समप्रत्यय में शिक्षा के द्वारा मानव की आन्तरिक शक्तियों व क्षमताओं का बाह्य जीवन से समन्वय स्थापित किया जाता हैं जिससे राष्ट्र का भौतिक विकास किया जाता हैं।

6. वर्तमान में शिक्षा के प्रति संतुलित दृष्टिकोण का विकास किया जाना नितान्त जरूरी हैं। मानसिक परीक्षण के साथ-साथ कल्पना शक्ति तथा मनोभावों को निर्मल बनाया जाना चाहिए। जिज्ञासु मस्तिष्क, अन्तःज्ञानी हृदय, चेतनशील आत्मा ओर चिन्तन करने वाले विवेक का विकास किया जाना चाहिए।

7. यदि हम विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का प्रयोग करके दरिद्रता को दूर करना चाहते हैं तो हम ललित कलाओं द्वारा मस्तिष्क की हीनता को दूर करने का प्रथम प्रयास करें। केवल भौतिक दरिद्रता ही दुःख का कारण नहीं हैं हमंे समाज के शक्तिशाली हितों को ही नहीं वरन् मानव हितों को भी ध्यान में रखना चाहिए। उत्तम शिक्षा की परिकल्पना को सत्यापित करके हम निर्माणकारी पहलूओं का विकास कर सकते हैं।

8. उत्तम शिक्षा व्यवस्था के द्वारा ही मनुष्य और सभ्य समाज का निर्माण किया जाना संभव हैं। शिक्षा व्यवस्था प्राचीन युगीन हो, या वर्तमान युगीन उसका उद्देश्य मनुष्य और समाज का निर्माण करना, होना जरूरी हैं। इस परिकल्पना को प्रस्तुत शोध द्वारा सत्यापित किया गया हैं।

9. विजातीय संस्कृति के कारण शिक्षा में आई गिरावट की चुनौतियों को स्वीकार कर उसके गतिरोधो को दूर करने हेतु प्रयास करना तथा सार्वभौमिक शिक्षा व्यवस्था के स्परूप को प्रतिपादित करना भी शोध परिकल्पना में शामिल किया गया हैं।

10. राष्ट्रीय शिक्षा नीति में वर्णित प्रमुख भारतीय शैक्षिक समस्या यथा निरक्षरता मूल्यपरक शिक्षा, अनुशासन हीनता, शैक्षिक गुणवत्ता, नैतिकता, व्यावहारिकता, गुरूशिष्य सम्बन्ध, आदि को भी परिकल्पित कर उपरोक्त समस्याओं का समाधान हेतु आचार प्रस्तुत करना शोध की परिकल्पना में शामिल हैं।

11. वर्तमान उच्च शिक्षा के उद्देश्यों के बारे में मात्र सेवा प्राप्त करना ही एक भ्रम की स्थिति बनी हुई हैं जो सर्वथा गलत हैं। अतः इस शोध परिकल्पना में उच्च शिक्षा के राष्ट्रीय उद्देश्यों के पुनर्निर्धारण पर भी बल दिया गया हैं।

12. स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के 69 वर्षो में शिक्षा के क्षेत्र में संख्यात्मक विकास तो काफी हुआ हैं परन्तु गुणात्मक दृष्टि से शिक्षा का ह्रास हुआ हैं। राजनीतिकरण से शिक्षा की गुणात्मक उन्नति का मार्ग अवरूद्ध हुआ हैं। इस शोध की परिकल्पना में उक्त समस्याओं के निवारण की ओर विशेष ध्यान दिया गया हैं।

13. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आवश्यकता इस बात की हैं कि हम राष्ट्र के भावी कर्णधारों को ऐसी शिक्षा प्रदान करें कि वे एक आदर्श, प्रगतिशील, आत्मनिर्भर तथा नैतिक गुणों से परिपूर्ण, स्वाभिमानी समाज की रचना करने में सक्षम हो सके। उक्त सन्दर्भ में ही "शिक्षा के सन्दर्भ में डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन् के शैक्षिक विचारों का अध्ययन एवं वर्तमान सन्दर्भ में उसकी प्रासंगिकता" को सत्यापित कर स्थापित करने का प्रयास किया गया हैं।

14. वर्तमान वैज्ञानिक युग में कॉलेजों, स्कूलों, विश्वविद्यालयों में चल रहे अधिकांश अध्ययन अध्यापन आयातित पुस्तकों, विचारों और सिद्धान्तों पर अवलम्बित हैं, परिणाम स्वरूप शिक्षा में न तो स्वदेशीपन हैं और न गुणात्मक वृद्धि। शिक्षा में अपेक्षित गुणवत्ता तथा सुधार लाने के लिए आवश्यक अनुशासन और नैतिक स्तर के दृष्टिकोण से डॉ. राधाकृष्णन के शैक्षिक आचार एवं दण्ड संहिता आज भी अत्यन्त प्रासंगिक हैं। उपर्युक्त संदर्भ में ही उक्त शोध उपरोक्त तमाम अवधारणाओं की परिकल्पना करके सत्यापन निरूपण विश्लेषण तथा मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत शोध का चयन लोकहित मंे किया गया हैं।

अध्ययन की शोध विधि, **उपकरण एवं स्त्रोत**- जिज्ञासु अनुसंधानकर्ता के लिए ऐतिहासिक साध नही एक मात्र स्रौत है। ऐतिहासिक साधनों की खोज दो प्रकार के साधनों से होती है।

प्राथमिक साधन- मूल ग्रन्थ आदि

द्वितीयक साधन- अनुवाद, लेख, समीक्षा, व्याख्यान, शोधग्रन्थ आदि।

उपकरण- प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा उपरकण के रूप में अनेक साक्ष्यों व साधनों यथा विभिन्न

www.ignited.in

हिन्दी ग्रन्थ, अग्रेजी ग्रन्थ, लेख, निबन्ध, ब्याख्यान, जीवनी, प्रतिवेदनों आदि को आधार मानकर उनका अध्ययन किया गया है।

प्राथमिक स्त्रोत- इस अध्ययन में शोधार्थी द्वारा प्राथमिक स्त्रोत के रूप में संस्कृत तथा हिन्दी के कुछ मूल ग्रन्थ का अध्ययन किया गया हैं तथा आवष्यकतानुसार उनसे सम्यक सामग्रियों का संकलन किया गया है।

द्वितीय स्त्रोत (गौणस्त्रोत)- इसके अन्तर्गत विभिन्न प्रसिद्ध लेखकों के अनुवाद, समीक्षाएॅ - टीकाएॅ, समय -समय पर विषय से सम्बन्धित लेखों, व्याख्यानांे, शोध ग्रन्थों पत्र-पत्रिकाओं, समाचार पत्रों में प्रकाशित लेखों विद्वद्जनों के शिक्षा एवं ऐतिहासिक पुस्तकों, जीवनियों आदि का प्रयोग किया गया हैं।

शोध प्रविधि

प्राथमिक एवं गौण स्त्रोतों के व्यापक अध्ययन मनन के पश्चात सम्बन्धित विषय सामग्री का चयन ,सूचनाओं, तथ्यों का संग्रह किया गया हैं। शोध उद्देश्यों के अनुरूप इन प्राप्त सूचनाओं का सम्यक विश्लेषण एवं विवेचन करते हुए विभिन्न शीर्षकों के अन्तगत इन्हैं व्यवस्थित एवं सारगर्भित रूप से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया हैं।

शोध का निष्कर्ष

डॉ. राधाकृष्णन् के शिक्षा दर्शन का अध्ययन करने के पश्चात् शोधकत्ता ने निष्कर्ष के रूप में अपने विचार प्रकट करने का प्रयास किया है। डॉ. राधाकृष्णन् भारतीय संस्कृति व शिक्षा शास्त्र के असाधारण विश्लेषक एवं व्याख्याता थे। वे भारत जैसे विशाल देश की तत्वदर्शी राष्ट्रपति के रूप में ही सामने नहीं आये, वरन् पूर्व व पश्चिम के मध्य एक अग्रणी सेतु स्वरूप भी साबित हुए। इसके अतिरिक्त भी वे बहुत कुछ थे। इस बात की जानकारी उनके जीवन व कृतियों का अध्ययन स्वतः ही दे देता है तथा उनके विचारों की ऊँचाई व सृजनात्मकता को स्पष्टतः परिलक्षित करता है। भारत व पश्चिमी देशों के विद्वतजनों को डॉ. राधाकृष्णन द्वारा लिखित पुस्तक "दर्शन का इतिहास" ने बेहद प्रभावित किया। उनकी पुस्तक में निहित विचारों ने उन लोगों के दृष्टिकोण को एक निश्चित आकार प्रदान किया। डॉ. राधाकृष्णन् के अनुसार शिक्षा का कार्य मनुष्य का संतुलित विकास करने की वह शक्ति है। जो केवल व्यक्ति का मानसिक विकास ही नहीं करें बल्कि उसका आन्तरिक विकास भी करें। डॉ. राधाकृष्णन् ने शिक्षा का लक्ष्य जनतांत्रिक पद्धति का विकास भी माना था। उनके अनुसार जनतंत्र मानव जीवन का प्राण है और उसके सर्वांगीण विकास के लिए जनतंत्र एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। अतः संस्थाओं का संगठन जनतंत्र की आधारशिला पर होना चाहिए। वर्तमान शिक्षा प्रणाली जनतन्त्रीय शिक्षण प्रणाली पर आधारित है। डॉ. राधाकृष्णन् ने स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में भी अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए। उन्होंने स्त्रियों की शिक्षा को ध्यान में रखते हुए इस बात पर बल दिया कि स्त्री तथा पुरूष को शिक्षा में समान अवसर उपलब्ध कराये जायें ताकि वे पुरूषों के समान शिक्षित होकर अपना विकास कर सकें। स्त्रियों की शिक्षा को ध्यान में रखकर ही उन्होंने कहा था कि स्त्रियों को उचित शिक्षा को ध्यान में रखकर ही उन्होंने कहा था कि स्त्रियों को उचित शिक्षा देने के लिए कानूनी प्रावधान ही पर्याप्त नहीं है। उसके लिए सामाजिक वातावरण तैयार किया जाए। महिला मण्डल जैसे संगठन आगे आकर कार्य करें जिससे महिलाएं शिक्षित होकर समाज के भावी निर्माण में अपना योगदान कर सकें। ग्रामीण तथा पिछड़े क्षेत्रों में स्त्रियों की शिक्षा की दयनीय स्थिति को देखकर उन्होंने सुझाव दिया कि विशेष कार्यक्रम बनाकर इस कमी को दूर किया जाना चाहिए। राधाकृष्णन् जी के द्वारा उपर्युक्त बताये गये शैक्षिक उद्देश्य वर्तमान शैक्षिक वातावरण में प्रभावी सिद्ध हो रहे हैं तथा वे शैक्षिक समस्याओं को हल करने में समर्थ है। जहाँ तक डॉ. राधाकृष्णन् जी के शैक्षिक दर्शन को देखा जाये तो वह वर्तमान शिक्षा दोषों को दूर करने में सहायक सिद्ध हुआ है। वैसे डॉ. राधाकृष्णन जी के शैक्षिक दर्शन का अन्य विद्वानों के शैक्षिक दर्शन में मूलतः बहुत भिन्नता नहीं है। डॉ. राधाकृष्णन् ने दर्शन को आधार बनाकर प्रकृतिवाद एवं यथार्थवाद का समन्वय करते हुए व्यावहारिकता की छाप दी तथा शिक्षा के क्षेत्र में समन्वयवादी दृष्टिकोण को अपनाया। शिक्षा के विभिन्न आयामों को समेटे हुए स्त्रियों के चारित्रिक, मानसिक, नैतिक, शारीरिक, आध्यात्मिक एवं व्यावसायिक पक्ष को सबल बनाते हुए व्यवहारिक दृष्टिकोण को अपनाया। डॉ. राधाकृष्णन् ने महिलाओं में नारीत्व के विकास की बात कहीं उन्हें गृहकला, पाककला में शिक्षित किये जाने की आवश्यकता पर बल दिया। उनमें शूरता, वीरता की भावना जागृत हो। नैतिकता के विकास की बात कही। अतः उपर्युक्त विवेचना को देखा जाये तो स्पष्ट है कि डॉ. राधाकृष्णन् जी के विचार बाह्नय रूप से भिन्न होते हुए मूलतः एक ही थे जो भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों को

समेटे हुए स्त्रियों का सर्वांगीण विकास करते हुए उन्हें राष्ट्रोन्मुख एवं जीवनोपयोगी बनाया जा सकते। अतः विभिन्न मार्गो पर चलकर दोनों ही लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। स्त्री शिक्षा के सन्दर्भ में जो विचार डॉ. राधाकृष्णन द्वारा प्रस्तुत किये गये हैं आज की आधुनिक शिक्षा प्रणाली में उनके शैक्षिक शाश्वत मूल्यों की आवश्यकता महसूस की जा रही है।

शैक्षिक निहितार्थ

भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात विभिन्न आयोगों की संस्तुति के बाद जिस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था और परम्परा को लागू किया गया हैं, जिस दर से छात्र संख्याँ में वृद्धि हुई हैं, उसी दर से शिक्षा में पूँजी निवेश में वृद्धि नहीं हुई हैं। ज्यों-ज्यों शिक्षा का स्तर बढता गया हैं, त्यों -त्यों यह प्रतिशत गिरता जा रहा हैं । इस प्रकार शिक्षा व्यवस्था का सम्पूर्ण ढाँचा पिरामिडनुमा होता जा रहा हैं। उच्च शिक्षा में छात्रों की संख्याँ में अभूतपूर्व वृद्धि हुई हैं, परन्तु शिक्षण संस्थाओं में उतनी वृद्धि नहीं हुई हैं, जितना कि अपेक्षित हैं। अतः आज उच्च शिक्षा में व्याप्त असंतोष को दूर करने के लिए आवश्यकता इस बात की हैं कि परम्परागत डॉ. राधाकृष्णन् की शिक्षा के आचारों को बदली हुई परिस्थितियों के अनुसार ढाला जाय। आज के परिवेश में डॉ. राधाकृष्णन् के शैक्षिक विचार एवं दर्शन अत्यधिक प्रासंगिक हो गया हैं। उनके 'आत्मा दीपोभव' का सिद्धान्त आज के समाज के लिए और उपयोगी हो गया हैं। अगर व्यक्ति में समाज के प्रति सकारात्मक सोच उत्पन्न करना हैं तो हमें डॉ. राधाकृष्णन् के सुझाये मार्ग को अविलम्ब अपनाना होगा। किसी भी शिक्षा एवं शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य व्यक्तित्व एवं चरित्र का सर्वांगीण विकास हैं। चूँकि डॉ. राधाकृष्णन् की शिक्षाएँ कायिक ,वाचिक एवं मानसिक विशुद्धि का लक्ष्य रखती हैं। अतः इनका उपयोग आधुनिक शिक्षा एवं शिक्षण में भली भाँति किया जा सकता हैं। मूल्यपरक शिक्षण प्रत्येक शिक्षा व्यवस्था का अंग रहा हैं। डॉ. राधाकृष्णन् की शिक्षा व्यवस्था के अन्तर्गत सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, प्रेम, करूणा, दया, विश्वबन्धुत्व सदृश्य अनेक शाश्वत मूल्यों को जीवन में आत्मसात करने पर बल दिया गया हैं। इन मूल्यों का आधुनिक शिक्षण से सम्बद्ध करके मूल्यपरक बनाया जा सकता हैं। डॉ. राधाकृष्णन् के विचारों के अन्तर्गत सदाचार पर विशेष बल दिया गया हैं आज भी शिक्षा का एक प्रमुख लक्ष्य शिक्षार्थी को सदाचारी बनाना हैं, ताकि वह न केवल ज्ञानी बन सके, अपितु सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन में एक आदर्श भूमिका निभा सके। डॉ. राधाकृष्णन् ने सबसे लिए शिक्षा प्राप्ति हेतु उपयुक्त हों, के अन्तर्गत पुरूषों के साथ नारी शिक्षा पर भी बल दिया था । आधुनिक शिक्षा पद्धति में भी नारी शिक्षा के विकास एवं उत्थान पर विशेष बल दिया जा रहा हैं। डॉ. राधाकृष्णन् के शैक्षिक विचारों में दूर-दूर से आये हुए शिक्षार्थी अनुशासित होकर शिक्षा ग्रहण करते थे। आज भी अनुशासन पालन शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य हैं। क्योंकि अनुशासन के बिना किसी लक्ष्य की प्राप्ति नहीं की जा सकती । यह अलग बात हैं कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अनुशासनहींनता विशेष स्थान बनाकर शिक्षा प्रणाली को दूषित कर रहा हैं। गुरू कुलों में शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र, स्नातक, अन्तेवासी स्वयं भिक्षार्जन करके ज्ञानार्जन करते थें। गुरू आश्रम में समिधा लाना, अन्न लाना तथा गुरू के गायों की सेवा करना उनका पूनीत कत्तव्य था। उक्त प्रणाली आज भी शिक्षार्थी को आत्म निर्भर या स्वालम्बी बनने की प्रेरणा देता हैं, ऐसा डॉ. राधाकृष्णन् जी का विचार है। डॉ. राधाकृष्णन् ने उन्ही शिक्षण विधियों का उपयोग किया था, जों विधियों का प्रचलन वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नहीं हैं। अतः परम्परागत शिक्षण विधियों की प्रासंगिकता आज भी सिद्ध हैं। वर्तमान शिक्षा के बहुत बडे क्षेत्र में वस्तुतत्व और गुणवत्ता हमारी वर्तमान आवश्यक्ता और भावी अपेक्षाओं के सन्दर्भ में अप्रर्याप्त हैं। इसके लिए निष्ठा और सेवा की भावना का अभाव होना सर्वसम्मत हैं। अतः शिक्षकत्व से परिपूर्ण, निष्ठा और सेवा भाव से ओत-प्रोत शिक्षक का होना जरूरी हैं, जिसके लिए डॉ. राधाकृष्णन् ने हमें इंगित किया हैं। अतः इन कमियों को पूरा करके वर्तमान शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाया जा सकता हैं।

कोठारी आयोग ने अपने प्रतिवेदन में कहा हैं कि "राष्ट्रीय पुर्ननिर्माण के कार्य की सफलता हमारे विद्यालयों एवं महाविद्यालयों से निकलने वाले छात्रों के गुणों पर निर्भर करती हैं। राष्ट्रीय चेतना का विकास शिक्षा प्रणाली का एक महत्वपूर्ण उद्धेश्य होना चाहिए। अपनी सांस्कृतिक विरासत के ज्ञान का विकास पुनर्मूल्यांकन एवं उसके प्रति भविष्य में अटल विश्वास उत्पन्न करके हमें इस उद्धेश्य की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील होना चाहिए ।" पराधीन भारत में शिक्षा ने औपनिवेशिकता, सामंतवाद और समाज में रूढिग्रस्तता को बढावा दिया। फलस्वरूप, भारतवासियों से उनके सम्मान और समरसता का का अपहरण करके शिक्षा को समाज के उच्च वर्ग तक सीमित कर दिया गया था। पाश्चात्य साहित्य और विज्ञान ने भारतीय युवकों के मन में स्वदेशी साहित्य, दर्शन और विज्ञान के बारे में हीनता बोध पैदा कर दिया। विदेश में पढे और अंग्रेजियत में रमें हुए नेताओं के हाथों देश की बागडोर आ जाने के कारण आजाद भारत में भी अंग्रेजी का आकर्षण और

www.ignited.in

प्रभाव कम नहीं हो पाया। शिक्षा पर अंग्रजी के प्रभुत्व के कारण आजादी के पश्चात सृजनशीलता क्रमशः कुण्ठित होती चली गई। हमारे कालेजों और विश्वविद्यालयों में चल रहा अधिकांश अध्ययन अध्यापन आयातित पुस्तकों, विचारों और सिद्धान्तों पर अवलम्बित हो गई। परिणामस्वरूप शिक्षा में न तो स्वदेशीपन लौट पाया हैं और ही गुणात्मक वृद्धि हुई हैं। अपेक्षित गुणवत्ता लाने के लिए आवश्यक अनुशासन और नैतिक स्तर के दृष्टिकोण से शैक्षिक आचार एवं शैक्षिक परम्परा आज भी अत्यन्त प्रासंगिक हैं । पिछले कुछ दशकों में हमारे देश ने शिक्षा के क्षेत्र में बहुत उन्नति की हैं, विज्ञान एवं प्रोधौगिकी के क्षेत्र में आशातीत सफलताएं अर्जित की हैं, परन्तु आज भी हम अनेकों शैक्षिक समस्याओं से जूझ रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति **1986** ने भी राष्ट्रीय स्तर की कुछ प्रमुख शैक्षिक समस्याओं जैसे निरक्षरता, मानव मूल्यों का ह्मास, अनुशासनहींनता, नैतिकता की कमी, शिक्षा की गुणवत्ता में कमी, व्यवसायिक निष्ठा की कमी, आत्मीयता का अभाव आदि का चयन कर इसके निदान हेतु प्रस्ताव प्रेषित किये हैं। इन समस्याओं का समाधान निश्चितक रूप से डॉ. राधाकृष्णन् ने जो सुझाव दिये हैं वो शैक्षिक परम्परा के लिए मील का पत्थर है। अतः प्रस्तुत शोध का शैक्षिक निहितार्थ यही हैं कि डॉ. राधाकृष्णन् के शैक्षिक दर्शन एवं विचारों को अपनाकर वर्तमान शिक्षा व्यवस्था को गुणवत्तापूर्ण बनाया जा सकता हैं तथा देश के लिए भावी पीढी का निर्माण किया जा सकता हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. मिश्र ह्नदयनारायण -समकालीन दार्शनिक चिन्तन, किताब महल, कानपुर,
2. राधाकृष्णन (सं.) -हमारी विरासज अनु. विजयकुमार हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली,
3. शर्मा ब्रजभूषण -मानवता तथा मानवतावाद श्री कला प्रकाशन-दिल्ली
4. श्रीवास्तव रमाशंकर -समकालीन भारतीय दर्शन, शारदा पब्लिकेशन-
5. वर्मा.ए.के. -राधाकृष्णन का मानवतावाद, जानकी प्रकाशन, पटना

Corresponding Author

सत्येन्द्र कुमार गौड*

शोधार्थी, लाडर्स विश्वविद्यालय, अलवर (राज.) भारत